Course - BA 3 (Hons.), Paper - 5th (PA).
TOPIC - लोक प्रशासन का विकास
Date - 12.05.2020.
Book Reference - Mohit Bhattacharya (लोक प्रशासन के नए आयाम), IGNOU notes. Civil Services guide.

Seema Kumari
Asst. Prof (Pol. Sc.)
RMC, Sasaram

लोक प्रशासन का विकास :-

लोक प्रशासन एक न्यूनतम सामाजिक विज्ञान है। लो० प्र० के अध्ययन का विकास राजनीतिशास्त्र अथवा लोकविधि के अध्ययन के रूप में हुआ है। अकादमिक विषय के रूप में अध्ययन का आरंभ करना दुरूह कार्य था। सरकारी विभागों एवं प्रशासन के कार्यों की अपनी गोपनीयता होती है।

सरकारी तंत्र में सुधार के आंदोलन ने विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में जोर पकड़ा। वहां लोक प्रशा० के ढांचे और कार्य व्यवहार को लेकर ज्ञान की एक विशेष शाखा के सुदृढ़ विकास के लिए विधिवत बौद्धिक प्रयास किए गए।

लोक प्रशासन का इतिहास निम्न पांच चरणों में विभाज्य है:

1. प्रथम चरण (1887 - 1926)
2. द्वितीय चरण (1927 - 1937)
3. तृतीय चरण (1938 - 1947)
4. चतुर्थ चरण (1948 - 1970)
5. पंचम चरण (1971 -)

1. प्रथम चरण (1887 - 1926) - एक विषय के रूप में लो० प्र० का जन्म 1887 में

अमेरिका के प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी में राजनीति के तत्कालीन प्राध्यापक वुडरो विल्सन को इस शास्त्र का जनक माना जाता है। 1887 में प्रकाशित अपने लेख 'The Study of Administration' में राजनीति और प्रशासन को अलग-अलग माना। फ्रैंक गुडनाउ ने 1900 में प्रकाशित अपने ~~लेख~~ पुस्तक 'राजनीति तथा प्रशासन' में दोनों को अलग माना है क्योंकि राजनीति राज्य इच्छा को प्रतिपादित करती है वहीं प्रशासन का संबंध इस इच्छा या राज्य नीतियों के क्रियान्वयन से है। 1926 में एल. डी. व्हाइट की पुस्तक 'लोक प्रशासन में अध्ययन की भूमिका (Introduction of the Study of Public Administration) प्रकाशित हुई। यह लोक प्रशासन की प्रथम पाठ्य पुस्तक थी जिसमें राजनीति प्रशासन का मुख्य लक्ष्य दक्षता और मितव्ययिता है। इस चरण में लो प्र की दो विशेषता रही -

1. लोक प्रशासन का उदय
2. राजनीति एवं प्रशासन में अलगाव में विश्वास।

द्वितीय चरण (1927 - 37) — W.F. विलोबी की पुस्तक 'Principles of Public Administration' से द्वितीय चरण का आरंभ माना सकते हैं विलोबी ने यह प्रतिपादित किया कि PA में अनेक सिद्धांत है जिनको क्रियांवित करने से PA को सुधारा जा सकता है। लो प्र० को राजनीति से पृथक और स्वतंत्र होना चाहिए तथा इसके सिद्धांतों को मोटे तौर पर सहज ही पहचाना और परिभाषित किया जा सकता है। मेरी पार्कर फालेट, हेनरी फेयोल, मूने, रिले आदि ने PA पर

Scanned with CamScanner

पुस्तकें लिखनी शुरु कीं. 1937 गुलिक तथा उर्विक ने 'Papers on the Science of Administration' महत्वपूर्ण पुस्तक का संपादन किया।

तृतीय चरण (1938-1947) - यह प्रशासन में सिद्धांतों को चुनौती देने का युग प्रारंभ हुआ। यह चरण PA के क्षेत्र में विध्वंसकारी रहा। सन 1938 में चेस्टर बर्नार्ड की 'कार्यपालिका के कार्य' पुस्तक प्रकाशित हुई। जिसमें प्रशासन के किसी भी सिद्धांत का वर्णन नहीं किया गया। 1946 में हर्बर्ट साइमन की किताब 'Administrative Behaviour' में यह सिद्ध किया गया कि प्रशासन में सिद्धांत नाम की कोई चीज नहीं है जो पु० आलोचनाओं का शिकार बना रहा।

चतुर्थ चरण (1948 - 1970) - यह चरण PA के लिए 'संकट का काल' रहा। हर्बर्ट साइमन की युक्ति संगत आलोचना के कारण सिद्धांतवादी विचारधारा अविश्वसनीय प्रतीत होने लगा। PA के लिए विकल्प की खोज हुई - वह था प्रशासनिक विज्ञान। PA व्यापार प्रबंध आदि के मिलकर प्रशा. विज्ञान की नींव डाली। 1956 में 'Administrative Science Quarterly' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ।

पंचम चरण (1970 -) - चतुर्थ चरण की आलोचनाओं, प्रत्यालोचनाओं और चुनौतियों ने कुल मिलाकर लो पु० का भला किया। PA का अध्ययन बहुचर्चित हो गया, नए - नए दृष्टिकोण विकसित हुए जिससे PA का चहुंमुखी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हुआ। अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान आदि के विद्वान PA में रुचि लेने लगे।

Scanned with CamScanner